

**चूर्णक** पुं. (तत्.) 1. सत्तू, सतुआ 2. वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे शब्द हो तथा श्रुति कटु अक्षर न हो 3. एक प्रकार का वृक्ष 4. गंध द्रव्य का चूर्ण।

**चूर्णकार** पुं. (तत्.) 1. चूर्ण करने वाला 2. आटा बेचने वाला 3. एक वर्ण संकर जाति वि. (तत्.) 1. चूर्ण करने वाला, पीसने वाला 2. चूना फूँकने वाला।

**चूर्णहार** पुं. (तत्.) चूरनहार नाम की बेल।

**चूर्णा** पुं. (तत्.) 1. आर्या छंद का दसवाँ भेद, जिसमें 18 गुरु तथा 21 लघु होते हैं 2. तौल में 32 रत्ती मोतियों की संख्या के हिसाब से भिन्न भिन्न लड़ियाँ।

**चूर्णि** स्त्री. (तत्.) 1. कौड़ी, कपर्दक 2. चूर्ण करना या बनाना 3. एक सौ कौड़ियों का समूह 4. पाणिनि कृत अष्टाध्यायी के सूत्रों पर पतंजलि मुनि प्रणीत महाभाष्य।

**चूर्णिका** स्त्री. (तत्.) 1. सत्तू, सतुआ साहि. 1. गद्य का एक भेद 2. ग्रंथ की जानकारी के लिए उसका भाष्य या शब्दार्थ देना।

**चूर्णिकार/चूर्णिकृत** पुं. (तत्.) महाभाष्यकार पतंजलि मुनि।

**चूर्णित** वि. (तत्.) 1. चूर्ण किया हुआ 2. पीसा हुआ।

**चूर्णी** वि. (तत्.) 1. चूर्ण, मिलाया हुआ या चूर्ण बनाया हुआ 2. कार्षापण नामक प्राचीन सिक्का।

**चूर्ति** स्त्री. (तत्.) जाना, गमन करना।

**चूर्मा** पुं. (तद्.) दे. चूरमा।

**चूल** पुं. (तत्.) 1. चोटी, शिखा 2. रीछ के बाल 3. सिर के बाल 4. सबसे ऊपर का कमरा स्त्री. (देश.) किसी लकड़ी का वह सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसके साथ जोड़ने के लिए ठोका जाए 5. पुराने समय में दरवाजों की निचली नोक जिसकी सहायता से दरवाजा खुलता था।

**चूलदान** पुं. (देश.) 1. बावर्ची खाना, रसोई घर, पाठशाला 2. गेलरी।

**चूला** स्त्री. (देश.) चोटी, शिखा, सबसे ऊपर का कमरा, चंद्रशाला।

**चूलिक** पुं. (देश.) मैदे की पतली पूरी, लूची नामक पकवान।

**चूलिका** स्त्री. (तत्.) 1. चूलक 2. नाटक का एक अंग जिसमें नेपथ्य से किसी घटना के हो जाने की सूचना दी जाती है 3. मुर्गे की कलंगी 4. हाथी की कनपटी या कर्ण मूल 5. धनुष का सिरा या ऊपरी भाग।

**चूलिकोपनिषद्** स्त्री. (तत्.) अथर्ववेदीय एक उपनिषद् का नाम।

**चूल्हा** पुं. (तद्.) मिट्टी, ईटों आदि की बनी हुई तीन बाजुओं वाली अंगीठी, जिस पर खाना पकाते हैं मुहा. चूल्हा जलना- खाना पकना; चूल्हा न्यौतना- घर के सब लोगों को निमंत्रण देना; चूल्हा फूँकना- भोजन पकाना; चूल्हे में डालना- नष्ट भ्रष्ट करना; चूल्हे में पड़ना- अस्तित्व मिटना प्रयो. चूल्हे में जाए तुम्हारा यह तमाशा।

**चूषण** पुं. (तत्.) चूसने की क्रिया।

**चूषा** स्त्री. (तत्.) 1. हाथी की कमर से बाँधी जाने वाली बड़ी पेटी या पट्टा 2. चूसने का कार्य या स्थिति 3. पेटी या कमरबंद।

**चूष्य** वि. (तत्.) चूसने के योग्य, जो चूसा जा सके।

**चूसना** स.क्रि. (तद्.) 1. जीभ और होठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस लेते हुए पीना 2. किसी चीज का सार भाग ले लेना प्रयो. एक बदमाश ने उस भले आदमी का सारा धन चूस लिया 3. किसी वस्तु को चूस-चूस कर समाप्त करना 4. किसी वस्तु का गीलापन सोख लेना।

**चूहड़** पुं. (देश.) दे. चूहड़ा।

**चूहड़ा** पुं. (देश.) 1. भंगी या मेहतर, चांडाल 2. निम्न प्रकार का लफंगा व्यक्ति।

**चूहा** पुं. (देश.) चार पैरों वाला छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बनाकर रहता है, मूषा, मूषक।